कविवर पं० श्री पद्मकान्त जी मालवीय—

कविरत्न पं० भैरव प्रसाद जी द्विवेदी 'भैरव' अच्छे रामायणी तथा सुन्दर कथा वाचक हैं। उनकी रचित मानस-तरंग देखने का सौभाग्य मुझे मिला है। कविरत्न जी ने मानस में वर्णित विभिन्न कथा प्रकरणों का इस पुस्तक में बड़ा ही सुन्दर, सुखद और आह्लादकारी विवेचन स्वरचित कविताओं द्वारा किया है और अपनी मनोरम कल्पनाओं द्वारा उनमें चार चाँद लगा दिये हैं। यह सारी रचनायें भक्ति रस से सराबोर हैं और सहृदय पाठक के मन को श्रद्धा-भावना से ओतप्रोत कर देने वाली हैं। कविताओं की भाषा भी आधुनिक है अर्थात् सुन्दर, सरल, और साफ यों मुझे पुस्तक के अन्त में संकलित उनके ग्राम गीत बहुत अधिक रुचे। "बाह्याडम्बर, शब्दाडम्बर, एवं कृत्रिम अलंकारों से रहित मानव के हृत्प्रदेश की यह झाँकी" अनोखी है। भगवान करे पण्डित जी की लेखनी से ऐसे ही अनेकानेक ग्राम गीतों की रचना हो और उनका खूब, खूब प्रचार हो। इस विद्वत्तापूर्ण साथ ही मनोहर रचना के लिये मैं व्यास जी का अभिनन्दन करता हूँ।

प्रयाग
चैत्र सुदी १३, २०५४

पद्मकान्त मालवीय

राष्ट्रीय अभिलेखागार
भारत
National Archives
of India

डा० आद्या प्रसाद जी मिश्र एम० ए०, डी० फिल, शास्त्री

[प्रोफेसर—प्रयाग-विश्वविद्यालय]

आदरणीय द्विवेदी जी !

नमस्कार ।

आपकी मानस-तरंग नामक कृति देखी । कृति देखकर प्रसन्नता हुई । मानस के गूढ़ रहस्यों का सुलझाव सरस एवं काव्यात्मक है । यत्र-तत्र मनोविनोदात्मक भी । कुछ स्थल विशेष सुन्दर लगे, जैसे—

"बहु धनुहीं तोरेउँ लरिकाईं"

"माँगी नाव न केवट आना"

"राम और शबरी" "श्री सीता जी और जटायु" "कैकेयी के प्रिय राम या भरत" आदि ।

इस कृति के लिये आपको अनेक धन्यवाद । आशा है यह कार्य आगे भी चलता रहेगा ।

प्रयाग)

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India